# अमृत प्रार्थना
## भगवान से

हे प्रभु! हे अंतर्यामी! हे जगतपते! हे सर्व समर्थशाली! सुना है कि गो माता मांस नहीं खाती है। वह मांसाहारी नहीं है।लेकिन जब वह अपने बछड़े को जन्म देती है,तो वह अपनी जिव्हा से उसके शरीर के जेर को चाट जाती है। यदि ग्वाला ध्यान ना दे तो उसके उपरांत, जो मांस का पिंड निकलता है, वह उसे भी खा जाएगी। वह अपने बच्चे की रक्षा के लिए बड़ी तत्पर रहती है। मानों वह मांसाहारी ना होते हुए भी उस दिन मांसाहारी हो जाती है।लेकिन उसे दोष नहीं लगता है। ठीक उसी प्रकार से अध्यात्म में, भक्ति मार्ग में अभी हमारा जन्म हुआ है और हम अपने पापों से लिपायमान हैं। जैसे सांप जब केचुल से लिपटा हुआ होता है, तो वह चल नहीं पाता। जब तक वह केचुल का त्याग नहीं करता तब तक वह दौड़ नहीं पाता। वैसे ही पाप से,दोषों से हम लिपटे हुए हैं, लदे हुए हैं। इसलिए अध्यात्म में हमारी गति नहीं हो पा रही। हम चल नहीं पा रहे। लेकिन जिस प्रकार से गो माता अपने बछड़े की जेर को चाट जाती है,वैसे ही हे प्रभु! आप भी हमारे पापों को चाट जाएँ, निगल जाए! जैसे नरसिंह भगवान ने भक्त प्रह्लाद के पापों को,हिरण्यकश्यप को मारकर,उसके रक्त का पान किया था।मानों भक्त प्रहलाद के पाप को वे चाट गए। वैसे ही हे प्रभु! हे शरणागत वत्सल! हम भी आपकी शरण में आए हैं! हमारी रक्षा करें! रक्षा करें ! रक्षा करें!